Social Perception.

Social Perception क्या है?

Social perception का अर्थ है "दूसरे लोगों को देखना, समझना और उनके व्यवहार, स्वभाव, सोच, विवेक व इरादों आदि के बारे में राय बनाना या जानना। जब हम किसी व्यक्ति के बारे में जानने या राय बनाते हैं तो हम उस व्यक्ति के चेहरे, कपड़े, बोलने का ढंग, उसका स्वभाव, शारीरिक हाव-भाव और व्यवहार आदि को देखकर उसके बारे में कोई धारणा बनाते हैं, तो इस पूरी मानसिक प्रक्रिया को Social perception (सामाजिक प्रत्यक्षीकरण) कहते हैं। दूसरे शब्दों में हम सकते हैं कि लोगों के बारे में हमारे मन में जो समझ और विचार बनते हैं, वही सामाजिक प्रत्यक्षीकरण (Social perception) है।

सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का सम्प्रत्यय (concept) 1940 में विकसित हुआ है लेकिन इसका अर्थ अस्पष्ट (Vague) ही रहा। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण (Person perception) को ही सामाजिक प्रत्यक्षीकरण माना है। Heider (हीडर) 1958 के अनुसार निर्जीव वस्तुओं के प्रत्यक्षीकरण को और सामाजिक प्रत्यक्षीकरण तथा व्यक्तियों के प्रत्यक्षीकरण को सामाजिक प्रत्यक्षीकरण कहते हैं। ~~दूसरे शब्दों में~~

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों के मूल्यांकन (appraisal) को सामाजिक प्रत्यक्षीकरण माना है। Chaplin (1975) ने कहा है कि सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का तात्पर्य दूसरे व्यक्ति के ऐसे व्यवहार की चेतना से है, जिससे उसकी मनोवृत्तियों, प्रवृत्तियों तथा नियमों की अभिव्यक्ति होती है। Crutch etal (1982) ने सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का व्यवहार अन्तर्व्यक्तिक प्रत्यक्षीकरण (interpersonal perception) या धारणा निर्माण (impression formation) के अर्थ में किया है।

सिल्वर्मैन एवं स्टॉनसन (1969) ने स्व-प्रत्यक्षीकरण (Self percep- को भी सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का एक आवश्यक अंग माना है। इसी तरह बैरोन तथा बिर्न (2005) ने सामाजिक प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा देते हुए कहा है कि "Social perception वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा हम दूसरे व्यक्तियों को जानने तथा समझने का प्रयास करते हैं। दूसरे शब्दों में "Social perception is the process through which we seek to know and understand other persons."

इस परिभाषा के विश्लेषण से सामाजिक प्रत्यक्षीकरण में कई बातों को शामिल होने का संकेत मिलता है।

(i) एक व्यक्ति समाज या समूह के दूसरे व्यक्ति को जानने तथा समझने का प्रयास करता है।

(ii) इस सम्बंध में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सम्बंध में एक विशेष धारणा (impression) बना लेता है।

(iii) एक व्यक्ति अपने आप को भी उस सामाजिक परिवेश में जानने व समझने का प्रयास करता है।

इस आधार पर सामाजिक प्रत्यक्षीकरण के अंतर्गत व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण (Person perception), स्व-प्रत्यक्षीकरण (Self-perception) एवं सामाजिक प्रत्यक्षीकरण (Social perception) की व्याख्या की जाती है।

Social Perception कैसे बनता है?:→

जब हम किसी नए व्यक्ति से मिलते हैं, तो हमारा मस्तिष्क तुरंत ये नोट करता है कि उस व्यक्ति का चेहरा और शारीरिक बनावट कैसा है?, उसका पहनावा और रहन-सहन कैसा है? बोलचाल बात करने का तरीका, उस व्यक्ति का आकर्षक व्यक्तित्व, उसकी आवाज़, आँखों का सम्पर्क, शरीर की गतिविधियाँ (body language) आदि इन सभी चिजों को जोड़कर हम उस व्यक्ति की एक छवि (impression) बना लेते हैं। यही मानसिक प्रक्रिया Social perception) कहलाती है। जैसे:-

- कोई व्यक्ति शांत और विनम्र भाषा में बात करता है → तो हम उसे सभ्य और समझदार मान लेते हैं,
- शिक्षक को देखकर ⟶ हमारे मन में ज्ञान, अनुशासन, आदर और सम्मान का भाव आता है। इसी तरह
- पुलिस को देखकर ⟶ कानून और अधिकार का विचार आता है।

सामाजिक प्रत्यक्षीकरण के प्रमुख तत्व:→

Physical Appearence):→ चेहरा, कद काठी, कपड़े, बात करने का तरिका, रहन-सहन आदि। लोग अक्सर बाहरी रूप देखकर राय बना लेते हैं।

- मौखिक/व्यवहार (या शाब्दिक) (Verbal behaviour):→
  - बोलने का ढंग
  - शब्दों का चयन
  - भाषा और लहजा। आदि
- Non verbal Behaviour:→ चेहरे का भाव, आँखों का सम्पर्क, हाथ पैर की गति आदि।

सामाजिक भूमिका (Social Role):→

जैसे -- शिक्षक, डाक्टर, पुलिस, विद्यार्थी आदि हर भूमिका में जुड़ी एक सामाजिक छवि निहित होती है।

Social Perception से जुड़े सिद्धांत :→

1. प्रथम प्रभाव (First impression) :- जैसे - पहली मुलाकात में हमारी राय नहीं बदलती है। हम उसे याद कर लेते हैं।
2. Stereotype :→ हम किसी समूह, समाज आदि के बारे में धारणा बना लेते हैं। जैसे :- जैसिक ब्राह्मण साँप से भी ज्यादा खतरनाक होते हैं, मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग अधिक क्रूर होते, सभी नेता झूठ बोलते हैं आदि।
3. Halo effect (हेलो प्रभाव) :→ किसी व्यक्ति में अच्छी विशेषता देखकर हम उसे अच्छा मान लेते हैं।

Social Perception का महत्व :→

① सामाजिक व्यवहार को समझने में सहायता
② अच्छे सामाजिक सम्बंध बनाने में मदद मिलती है।
③ समाज में समायोजन आसान हो जाता है।
④ नेतृत्व और सहयोग की भावना बढ़ती है।
⑤ गलतफहमियों को कम करने में सहायक होती है।

गलत Social Perception के दुष्परिणाम :→

① पूर्वाग्रह (Bias) का पैदा होना।
② समाज, परिवार आदि में भेदभाव हो सकता है।
③ सामाजिक तनाव बढ़ सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'सामाजिक अवबोध प्रत्यक्षीकरण' सामाजिक जीवन की एक आवश्यक प्रक्रिया है। हम इसके माध्यम से दूसरे व्यक्ति को समझते हैं और समाज में उचित व्यवहार करना सीखते हैं। Social Perception के द्वारा हम दूसरे व्यक्ति के साथ सम्बंध स्थापित करने तथा समाज में संतुलित जीवन जीने में मदद मिलती है। परंतु यहाँ यह भी ख्याल रखना चाहिए कि हम अपनी धारणा को संतुलित और निष्पक्ष रखें।